प्रथम अध्याय

अभिमन्यु अनत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

अभिमन्यु अनत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रास्ताविक :

अभिमन्यु अनत मॉरिशस की धरती के लेखक है । मॉरिशस के हिंदी लेखकों में अभिमन्यु अनत एकमात्र ऐसे रचनाकार हैं जिनकी कृतियाँ मॉरिशस की अस्मिता , संस्कृति , आधुनिक जीवन के तनावों , संघर्षो एवं आस्थाओं के साथ भारतीयता को भी समान रूप से अभिव्यक्त करती आयी हैं । अभिमन्यु अनत जितने मॉरिशस के हैं, उतने ही भारतीय पाठकों के भी रहे है । अनत के साहित्य ने मॉरिशस और भारत के बीच साहित्य–सेतु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है । भारत से दूर रूस , अमरिका ,जापान ,जर्मनी , इंग्लड, पोलैंड आदि देशों में हिंदी विद्वानों एवं लेखकों का जो समुदाय है, उसमें मॉरिशस के हिंदी लेखक अभिमन्यु अनत ऐसे मौलिक रचनाकार है,जो किसी भी अन्य भारतीय हिंदी लेखक की तरह पाठकों के प्रेम और प्रशंसा के पात्र रहे हैं । मॉरिशस में हिंदी लेखकों की जो परंपरा रही है , उनमें प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, ब्रजेंद्रकुमार भगत, 'मधुकर ', ठाकुरदत्त पाण्डेय, दीपचंद बिहारी आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

अभिमन्यु अनत भारतवंशी है । उनके साहित्य का मूलाधार भी मॉरिशस का भारतवंशी समाज है । अभिमन्यु अनत हिंदू संस्कृति के भक्त है । वे हिंदू संस्कृति के मूल्यों को एवं जीवन–पध्दति को महत्त्वपूर्ण मानते हैं । वे विसंस्कृतिकरण की समस्या को सर्वाधिक बिकट समस्या मानते है। वे हिंदी लेखक है और हिंदी को अपना जीवन मानते है ।

(अ) जीवनी : —

अभिमन्यु अनत की जीवनी को जानने के लिए उनका जन्म एवं परिवार , वैवाहिक जीवन , शिक्षा के लिए किया संघर्ष , पठन–पाठन, उनके व्यक्तित्व पर पड़े विविध वादों का प्रभाव,साहित्य के लिए मिली प्रेरणा , उनके शौक , साहित्य सृजनारंभ कब किया ? उनका जीवन–दर्शन ,उन्हें प्राप्त सम्मान आदि को विस्तार से जान लेना जरूरी है ।

(1) जन्म एवं परिवार : —

मॉरिशस के प्रख्यात एवं श्रेष्ठ उपन्यासकार अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त, 1937 को मॉरिशस के उत्तर प्रान्त के त्रिओले गॉव में हुआ । आपके दादाजी आगरा के थे । आपकी दादी बंगाल की थी । दादाजी का नाम अनतसिंह और नानाजी का जवाहरसिंह था । आपके दादाजी दलालो के बहकाटे में आकर मॉरिशस में एक मजदूर के रूप में आये थे । उन्हें बताया गया था कि मॉरिशस में पत्थर उठाने पर उसके नीचे सोना मिलता है ।

अभिमन्यु अनत के पिताजी का नाम पत्तिसिंह और माताजी का सुभागिया है । आपके दादाजी विद्रोही स्वभाव के थे । कोठी के गोरों के साथ उनकी कई बार मुठभेड़ होती रहती थी । पिताजी हमेशा मजदुरों को संगठित करने और दास–नियति को समाप्त करने के लिए प्रयास करते थे । पिताजी मजदूर से खेतिहर बने । लेकिन अपने दानी स्वभाव के कारण वे लेखक के लिए एक बीधा जमीन भी न छोड़ पाये।

इनके ग्यारह भाई–बहनों में आज केवल चार जीवित है । दो बड़ी बहने और एक छोटा भाई है । माँ पूजा–पाठ पर बहुत अधिक विश्वास करती है , विशेषकर दुर्गा पाठ पर । लेखक के घर पर रोज रामायण, महाभारत पढ़ी जाती है । इसी कारण लेखक पर धार्मिक संस्कारों का प्रभाव है । उन्होंने माता से तल्लीन पठन–प्रवृत्ती को अपनाया और पिताजी से आम आदमी के प्रति हमदर्दी को ।

(2) वैवाहिक जीवन : ——

अभिमन्यु अनत ने एक अनाथ लड़की से ब्याह किया । उसका नाम सरिता है । वह एक सुसंस्कृत भारतीय गृहिणी है । लेखक की पत्नी पढ़ी–लिखी नहीं थी।पर बाद में स्वंय लेखक ने उन्हें पढ़ाया–लिखाया । अभिमन्यु अनत के कोई संतान नहीं है । फिर भी उनके पति–पत्नी के रिश्ते में कभी दरार नहीं आयी । उनका वैवाहिक जीवन आनंद से पूर्ण है । उन्होंने अपने एक भांजे और दो भतीजे को अपनी संतान माना है । तीनों अपने माँ–बाप से अधिक अनत जी को चाहते है । बच्चों और चाचा में कभी कोई दीवार खड़ी नहीं हुई । लेखक को अपने परिवार से संतोषजनक प्रेम प्राप्त हुआ है ।

(3) शिक्षा–संघर्ष : ——

लेखक का जन्म मॉरिशस के एक समृद्ध परिवार के अभावग्रस्त दिनों में हुआ । उनका जीवन अभाव में ही गुजरा है । घर की दयनीय स्थिति के कारण वे औपचारिक शिक्षा

से वंचित रहे है । वे जब अठराह साल के थे तब उनके माँ बाप लंबी बीमारी झेल रहे थे । अभिमन्यु अनत की कॉलेज की पढ़ाई तीसरे वर्ष के बाद बंद हो गयी थी । घर पर छोटे भाई बहन थे, उनका गुजारा करने के लिए लेखक की माँ कभी–कभी खेत में मजदूरी करती । वह मुरगियों तथा बकरियों को पालती थी । उन अभावग्रस्त दिनों में माँ लेखक को विवश होकर कह भी देती कि ' कोई नौकरी क्यों नहीं करते ?' आगे की पढ़ाई के लिए अवसर प्राप्त नहीं हुआ । वे खेतों की ओर चल पड़े । लेकिन जितनी शिक्षा प्राप्त की उसके लिए उन्होंने स्वंय कष्ट उठाये , ट्युशन्स किये ,बस में कन्डक्टर बने, बस गराज में मकॅनिक की नौकरी की । स्पष्ट है कि लेखक को अपनी शिक्षा के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा , बहुत अपमान , गालियाँ सुननी पड़ी । परंतु मन की आकाक्षाओं के आगे संकट के सारे बादल धीरे–धीरे हट गये ।

(4) पठन–पाठन : ——

अभिमन्यु अनत ने ग्यारह साल की उम्र से ही रामायण, महाभारत के अलावा महारानी झाँसी, दुर्गादास राठौर, शिवाजी महाराज ,महाराणा प्रताप, विवेकानंद जैसे महापुरूषों के जीवन चरित्रों को पढ़ना आरंभ किया । इसी बीच उन्होंने भारत के स्वतंत्रता–अभियान के सेनानियों की जीवनियाँ भी पढ़ी है । जैसे महात्मा गांधीजी , गुरूदेव नेताजी तथा अन्य क्रांतिकारी । भगवान कृष्ण इनके प्रिय चरित्र रहे है । ' चंद्रकांता ' के बाद प्रेमचंद साहित्य, शरत् बाबू का ' चरित्रहीन ' साथ ही उनकी अन्य रचनाएँ भी पढ़ी है ।

अभिमन्यु अनत शरत् बाबू के बारे में कहते है, " शरत् बाबू का ' चरित्रहीन' पढ़ते वक्त खुद को रचनाकार बनाने का पागलपन सिर पर सॅवार हो गया । धीरे–धीरे आधुनिक साहित्यकारों की रचनाओं के संपर्क में भी आता गया ।"[1]

भारतीय लेखकों के अलावा अन्य विदेशी लेखकों की रचनाओं को भी पढ़ा है । जैसे, रोबर्ट एडवर्ड हार्ट , मार्सेल काबों , माल्कोम दे साज़ाल, कामू, सार्त्र , ताल्सताय , दास्तोवस्की आदि ।

(5) प्रभाव : —

अभिमन्यु अनत पर भारतीय साहित्य का गहरा प्रभाव होने की बात को वे स्वीकार करते है । वे कहते है, " मेरी धमनियों में मॉरिशस दौड़ता है, क्योंकि बना तो मैं मॉरिशस की

---

1 डॉ, कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत : एक बातचीत – पुष्ठ–42 ।

मिट्टी से ही हूँ , लेकिन रोशनी मुझे भारत ने दी । इसलिए मेरे अंग–अंग में मॉरिशस के साथ–साथ भारत हर वक्त विद्यमान रहता है ।"[1]

अभिमन्यु अनत पर मार्क्सवाद , यथार्थवाद , आदर्शवाद , गाँधीवाद का भी प्रभाव है। प्रारंभ में उन्होंने प्रेमचंद की तरह आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद को अपनाया । वे किसी एक विचार–दर्शन से प्रतिबद्ध नहीं है । यदि उनकी कोई प्रतिबध्दता है तो मानवजाति से , मानवता से तथा मानव की नियति से । यही कारण है कि उन्हें न तो गाँधीवादी कहा जा सकता है और न ही मार्क्सवादी , या समाजवादी । वे गाँधीजी और मार्क्स दोनों की ही आवश्यकता अनुभव करते हैं । मानव जाति के कल्याण के लिए उपयोगी हर विचार–दर्शन का वे सहर्ष स्वागत करते है । वे कबूल करते है कि ,' मैं उस नंगे यथार्थवाद को नहीं स्वीकार कर पाता जिसका फैशन आज कुछ समृद्ध देशों के साहित्य में चल पड़ा हुआ है ।'[2]

अभिमन्यु अनत अपने देश के पंडित वासुदेव विष्णुदयाल से काफी प्रभावित और प्रेरित रहे है । वे अपनी पीढ़ी के पूजानंद नेमा , रामदेव धुरंधर. आदि के विचारों का आदर करते है।

(6) <u>प्रेरणा</u> : ——

अभिमन्यु अनत प्रेरणा को अनिवार्य मानते है । बचपन से ही भारत उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत रहा है । अभिमन्यु अनत स्वीकार करते है कि,"प्रेरणा को मैं अनिवार्य मानता हूँ। मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा इतिहास की यातना , उससे उपलब्ध आम आदमी की वह दयनीय स्थिति और उसका उस स्थिति के सामने कभी न टूटने का संकल्प रहा है ।"[3]

इसी प्रेरणा से अभिमन्यु अनत ने रचनाएँ लिखी है । यह प्रेरणा उन्हें अपने देश –परिवेश से मिलती है । इस प्रेरणा की मानसिक यातना ने ही उन्हें उपन्यास लेखन की ओर प्रवृत्त किया । साथ ही भारतीय लेखक साहित्यकारों से भी समय समय पर उन्होंने प्रेरणा ग्रहण की है । ऐसे में से उल्लेखनीय है,- जैनेद्र , यशपाल , कमलेश्वर , धर्मवीर भारती , राजेन्द्र यादव, गजानन माधव मुक्तिबोध, धुमिल , विमल मित्र, फणिश्वरनाथ रेणु आदि ।

---

1 डॉ. कमलकिशोर गोयनका - अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पृष्ठ – 43 ।

2 वहीं –पृष्ठ – 58 ।

3 वहीं पृष्ठ–56 ।

(7) शौक : ——

अभिमन्यु अनत एक महान उपन्यासकार तो है ही , पर साथ–ही–साथ एक अच्छे चित्रकार भी रहे है । आपकी कलाकृतियों की कई प्रदर्शनियाँ लग चुकी है । नाटक–लेखन, निर्देशन और अभिनय में भी वे रूचि रखते है , इस क्षेत्र में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की है । एक चित्रकार होने के नाते उन्होंने जीवन में जो अभाव, दुःख–दर्द देखे, उसे ही कैन्वस पर उतारा । उनके चित्रों की पहली प्रदर्शनी दर्द के रंगों से भरे चित्रों की ही रही थी । दूसरी प्रदर्शनी में उन्होंने रवीन्द्र – शताब्दी के अवसर पर गीतांजली की पचास कविताओं को रेखाओं और रंगों में बाँधा था ।

(8) साहित्य सृजनारंभ :——

अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य लेखन का प्रारंभ रेडिओ नाटक से किया। बाद में वे कथात्मक साहित्य की ओर अग्रसर हुए । सभी विधाओं के बाद उन्होंने कविताएँ लिखी । वे पहले चित्रकार बनें फिर नाटककार, कथाकार । उनकी प्रथम प्रकाशित रचना ' टूटी प्रतिमा ' कहानी है।वह ' अनुराग ' पत्रिका में 1900 में प्रकाशित हुई है । इसी साल इनकी एक और कहानी ' कल्पना ' इसी पत्रिका में प्रकशित हुई थी । इस तरह आपने प्रारंभ में विविध पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया । इनके कभी कविता, कभी उपन्यास प्रकाशित होते रहे । इनका पहला उपन्यास ' और नही बहती रही ' सन 1970 में राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ था ।

(9) जीवन दर्शन :——

अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य उनके जीवन–दर्शन का प्रामाणिक दर्पण है । उनके उपन्यास में कोई काल्पनिक गाथाएँ तो है ही नहीं , उन्होंने जो देखा, सहा, अनुभव किया वहीं लिखा । एक सच्चे कलाकार होने के नाते उनकी अपनी फिलासॉफी भी है । उन्होंने जो हकीकत है उसे ही अंकित किया है । उनके जीवन के कुछ सिद्धांत है ।

अभिमन्यु अनत दुसरों के सुख में अपना सुख माननेवाले मानवतावादी लेखक है । वे मानव–जाति को शोषण मुक्त देखना चाहते है । उनका कहना है ," जीवन का चरम सुख मेरे लिए आदमी से आदमी के शोषण का अंत हो जाने में होगा । उसे ही मैं पूरी मानव–जाति की

चरम उपलब्धि मानूँगा ।"[1]

अभिमन्यु अनत ने सत्य, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता, मानवता को अपने जीवन का लक्ष्य, जीवन का मूल्य माना है । नारी की स्थिति के संबंध में प्रेमचंद की तरह अभिमन्यु अनत मनुष्यवादी है । वे नारी को पुरूष के लिए प्रेरक और शक्ति–संचारिका मानते हैं । इसकी झलक हमें उनके उपन्यासों में मिलती है । अभिमन्यु अनत अपने साहित्य को जनता का ही साहित्य मानते है। इस संदर्भ में उनका कहना है, " मै अपने साहित्य को ' जनता का साहित्य ' कह सकता हूँ । – – – – मैंने जनता के जीवनमूल्यों, जीवनदर्शों के बारे में लिखा है--।"[2]

(10) जीविका : ——

अभिमन्यु अनत ने **अट्ठारह साल** तक हिंदी का अध्यापन किया । फिर वे तीन वर्ष तक युवा मंत्रालय में नाट्य कला विभाग में नाट्य प्रशिक्षक रहे । इसके उपरांत दो वर्ष के लिए महात्मा गांधी संस्थान में ' हिंदी अध्यक्ष ' रहे । अनेक वर्षों से वे संस्थान की हिंदी पत्रिका ' वसंत ' का संपादन करते रहे है । फिलहाल मोका (मॉरिशस) स्थित महात्मा गांधी संस्थान में हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत है । उन्हें उनके लेखन से जीविका के लिए धन प्राप्त होता आया है ।

(11) सम्मान : —

'अभिमन्यु अनत उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, हिंदी अकादमी दिल्ली , राजीव गांधी स्मृति परिषद नई दिल्ली, के.के. बिडला फाउंडेशन नयी दिल्ली के अलावा अनेक संस्थानों से सम्मानित रहें हैं ।"[3] उनकी कृतियों और साहित्यिक योगदान के लिए ये सारे सम्मान उन्हें समय–समय पर प्राप्त हुए ।

(ब) व्यक्तित्व : ——

श्री अभिमन्यु अनत का जन्म अर्थात एक महान व्यक्ति का जन्म है । इस प्रतिभासंपन्न साहित्यकार ने औपनिवेशिक काल के अंतिम शासक अंग्रेजों के शासन–काल में

---

1. डॉ. कमलकिशोर गोयनका– अभिमन्यु अनत एक बातचीत – पुष्ठ –36 ।
2. वहीं – पुष्ठ –55 ।
3. अभिमन्यु अनत - 'अब कल आयेगा यमराज' – समर लोक - अप्रेल - जून 2001 पृ. 8

आये आप्रवासी भारतीय कुली–मजदूर परिवार में जन्म लिया किन्तु उनका व्यक्तित्व महानता से युक्त है, क्योंकि उन्होंने अपने पूर्वजों पर हुए अंग्रेजों के अन्याय अत्याचार को अपनी लेखनी द्वारा वाणी दी, उन्हें अपनी श्रध्दान्जली अर्पित की । उस गूँगे इतिहास को विश्व रंगमंच पर बड़ी खूबी से रखा । उनका लेखकीय व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है ।

(1) निड़र व्यक्तित्व :—

अभिमन्यु अनत का व्यक्तित्व एक निड़र व्यक्ति का रहा है । उनकी लेखनी को लेकर अनेक समस्याएँ उठी उन पर प्रतिबंध भी लगाये गये । लेकिन अभिमन्यु अनत निड़रता से अपनी लेखनी को चलाते रहे । भारतीय गांधी संस्थान की नींव जब ड़ाली गयी तो उसका मुख्य प्रयोजन मॉरिशस में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार । लेकिन जब उसी संस्थान की पत्रिका में हिंदी के साथ हो रहे व्यभिचार पर अभिमन्यु अनत ने एक लेख लिखा तो उसे जलाया गया । उन्हें धमकियाँ दी की वे व्यवस्था का अपमान न करें परन्तु वे धमकियों की परवाह किये बिना लिखते रहे । उनके ' कोप–भवन ' और ' मरिशा गवाही देना ' नाटक एवं साहित्यिक टेलिविजन कार्यक्रम पर भी प्रतिबंध लगाया गया था ।

मॉरिशस में हिंदी की दयनीय स्थिति का एक कारण सरकार की गैर–जिम्मेदारी एवं अयोग्यता थी । अभिमन्यु अनत का यह आरोप मॉरिशस के प्रधानमंत्री के खिलाफ था । परन्तु उन्होंने डरकर अभिमन्यु जी के खिलाफ पाबन्दी नहीं लगायी । प्रधानमंत्री शिव सागर रासगुलाम कहते है, "यह तो मेरे और सरकार के खिलाफ जो कुछ लिखता है वह तो एक चौथाई ही होता है । इसके साथ पाबन्दी करेंगे या रोकने की कोशिश करेंगे तो यह हमारे खिलाफ चार पर चार लिखेगा ।"[1]

अतः स्पष्ट है वे अपनी लेखनी को निड़रतापूर्वक चलाते है ।

(2) विनम्र तथा पुस्तक प्रेमी : ——

अभिमन्यु अनत का व्यवहार भले वह घरवालों के साथ का हो या अन्य मित्रों के साथ–वह नम्रता का होता है । अभिमन्यु अनत ने अपने जीवन में पुस्तकों को नगीना माना । उनका कहना है कि नगीने से अधिक आकर्षक वस्तु पुस्तक के सिवा कुछ नहीं हो सकती । उन्होंने अपने आयु के आठ–नौ वर्ष से ही पुस्तकों को नगीना समझकर अपनाने की चेष्टा की है । आज भी उसे नगीना ही समझकर संस्थाओं को बाँटते रहते है ।

---

1. अभिमन्यु अनत – आत्म विज्ञापन –पृष्ठ – 160 ।

(3) <u>आशावादी</u> : ——

अभिमन्यु अनत के जीवन में बहुत सारी मुसीबतें आयी । ये मुसीबतें अधिकतर आर्थिक थी । उन्होंने एक आशावाद मन में रखकर ही सभी समस्याओं का सामना किया । वे बड़े माने जानेवाले लोगों की संकीर्ण मनोवृत्ति देखकर दुःखी होते हैं । पर वे कभी निराश नहीं होते । आज अगर हालत ठीक नहीं है तो कल जरूर अच्छे दिन आयेंगे । कल जरूर साम्यवाद आयेगा , ऐसा उनका कहना है । यही बातें उनके साहित्य में झलकती है । वे सिर्फ आशावादी नहीं है तो उन आशाओं को पूरा करने के लिए वे सदैव क्रियाशील रहते है ।

<u>साहित्यिक व्यक्तित्व</u> : ——

अभिमन्यु अनत की लगभग पचास रचनाएँ हिंदी की विविध विधाओं में प्रकाशित हो चुकी है । अभिमन्यु अनत मॉरिशस साहित्य में तो प्रख्यात है । साथ ही मॉरिशसेतर देशों में भी पहचाने जाते हैं । अभिमन्यु अनत को ' मॉरिशस का कथा–सम्राट एवं प्रेमचंद ' हा जाता है , तो भारत में ' मॉरिशस के प्रेमचंद ' के रूप में परिचित है ।

अभिमन्यु अनत के साहित्यिक व्यक्तित्व की यह खासियत रही है कि, उन्होंने मात्र मनोरंजन के लिए साहित्य नहीं लिखा । उन्होंने आप्रवासी भारतीय मजदुरों की व्यथा , उनके जीवन में आयी सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं को रेखांकित किया है। अभिमन्यु अनत का साहित्यिक व्यक्तित्व हमेशा जनसाधारण का प्रतिनिधित्व करनेवाला है । इसी कारण उन्हें डॉ, कमलकिशोर गोयनका प्रेमचंद के उत्तराधिकारी मानते हैं । अभिमन्यु अनत ने साहित्य और समाज का अटूट संबंध माना । अभिमन्यु अनत का साहित्य सामाजिक न्याय , समता की बुनियाद पर खड़ा है ।

अभिमन्यु अनत स्वभाव से स्वाभिमानी है । वे अपनी बात पर ड़टे रहते है। किसी भी प्रलोभन में उनकी लेखनी को मोड़ सकने का साहस नहीं है ।

(4) <u>कवि</u> :—

' किसी जमाने में मॉरिशस के प्रख्यात साहित्यकार अभिमन्यु अनत " शबनम" नाम से कविताएँ लिखते थे , किन्तु वर्षो से अब वे कहानी और उपन्यास लिखने में संलग्न हैं ।'[1] कवि अभिमन्यु अनत भावुक है । उन्होंने अपनी कविताओं में आप्रवासी भारतीय मजदुरों की व्यथा,

1. अमरेन्द्र मिश्र- ' मॉरिशस का साहित्यिक परिदृश्य -' समकालीन भारतीय साहित्य - सितंबर - अक्तूबर 2001 - पृ० 27.

एक आम आदमी की दयनीयता , सम–सामयिक परिस्थितियों , आर्थिक विषमताओं , मालिक–मजदुरों के अंतर , राजनीतिक भ्रष्टाचार , भाई–भतिजा वाद पर व्यंग्य किया है । कवि अभिमन्यु अनत आम आदमी की पीड़ा से मुक्ति चाहते है । उनका कवि मन अत्यंत संवेदनशील है। इनकी अधिकांश लघु कविताएँ है जो आदमी को झकझोरती है । उनकी कविताओं में मॉरिशस समाज जीवन उभर कर आया है ।

अभिमन्यु अनत के तीन काव्य–संग्रह प्रकाशित हुए । ' नागफनी में उलझी सॉसे ' काव्य संग्रह की ' खाली पेट ' , ' कितना कठिन ', ' गूँगा इतिहास ' आदि तो ' कैक्टस के दॉत ' काव्य–संग्रह कीं ' हवा और हवा ', ' स्वर्ग और स्वर्ग ' आदि कविताएँ सशक्त मानी जाती है। ' एक डायरी बयान ' काव्य संग्रह कवि के जन्म दिन से आजादी की वर्ष गाँठ तक की काव्यमयी डायरी यात्रा हैं ।

(5) <u>कहानीकार</u> :—

अभिमन्यु अनत ने जो कहानीयाँ लिखी उन्हें कल्पना के आधार पर नहीं लिखा । जो अनुभव किया उसे ही प्रस्तुत किया है । उनका कहना है कि, "मैने कहानियाँ मात्र दिमागी कसरत के लिए नहीं लिखीं और न ही मात्र शिल्प की जानकारी प्रदर्शित करने के लिए । मेरी हमेशा यह कोशिश रही है कि मेरी कहानियों को पाठक किन्हीं दूसरे नक्षत्रों से आयी हुई वस्तु न समझे ।"[1]

अभिमन्यु अनत की कहानियाँ संवेदना एवं कलात्मकता से पाठक को अभिभूत करती हैं। पाठक का मन उनमें अधिक रमा हैं , वे पाठक के भावों को उत्तेजित करती हैं । कुछ सर्वथा मौलिक प्रसंगों एवं परिस्थितियों से परिचित कराती है और पाठक को सोचने को विवश करती है । अभिमन्यु अनत की लेखनी में मन पर वज्र के समान आधात करने की क्षमता है ।

अभिमन्यु अनत की कहानियों का उनके स्वय के जीवन से गहरा संबंध है । उनका कहना है , ' खामोशी के चीत्कार ' की ये कहानयाँ मेरे अपने जीवन से संबध्द हैं – ' माथे का टीका ', ' खामोशी के चीत्कार ' , ' कोलाहल ', ' सुलह ', आदि ।'[2]

अतः स्पष्ट है वे अपने जीवनानुभव को ही कहानियों में प्रस्तुत करते हैं । वे स्वयं सभी कहानियों में कहीं ना कहीं मौजूद रहते है ।

---

1. डॉ. कमलकिशोर गोयनका - अभिमन्यु अनत : एक बातचीत – पुष्ठ –101 ।
2. वहीं – पुष्ठ –102 ।

(6) <u>नाटककार</u>

अभिमन्यु अनत एक सफल एवं सशक्त नाटककार है । उन्होंने सतरह वर्ष की आयु में ' परिवर्तन ' नामक अपना पहला नाटक मॉरिशस के महेश्वरनाथ मंदिर के विस्तृत भवत में प्रस्तुत किया है । उन्होंने पंडित विष्णुदयाल के सुझाव पर अपना नाट्य आंदोलन शुरू किया । अजन्ता मंच की ओर से उन्होंने स्थानीय टेलिविजन के लिए तीस से ऊपर नाटक लिखे, निर्देशन किया और उनमें विभिन्न भूमिकाएँ निभायी ।

अभिमन्यु अनत का विचार है कि, " नाटक को मैं बहुत ही सशक्त मानता हूँ। मैंने अपने नाटकों के दर्शकों से सीधे बात की हैं और यह माना है कि लेखक और जनता का इतना सही संवाद और संघर्ष किसी भी दूसरी विधा में संभव नहीं है ।"[1]

अभिमन्यु अनत अपने नाटकों में वर्तमान हालात पर निराशा व्यक्त करते हैं । वे हमेशा अपने नाटकों द्वारा युवकों का समाज व्यवस्था के विरोध में उठा विद्रोह , उनकी राजनेताओं के कपट से दबती आवाज , आप्रवासी भारतीय मजदुरों की दयनीयता को दिखाते हैं । वे वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन चाहते हैं । उन्होंने मॉरिशस समाज की दयनीयता को रंगमंच पर प्रस्तुत किया है । उन्होंने नाटक के सभी तत्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है ।

(7) <u>एकांकीकार</u>

अभिमन्यु अनत का प्रथम एकांकी नाटक ' परिवर्तन ' रहा है । उन्होंने इसे सन् 1954 में त्रिओले के महेश्वरनाथ मंदिर के विस्तृत भवन में प्रस्तुत किया । नाटक की तरह एकांकी में भी विषय की विविधता एवं एकांकी के तत्वों का सफल निर्वाह हुआ है। इनकी सभी एकांकियाँ रंगमचीयता एवं अभिनय की दृष्टि से सफल सिद्ध हुई है । यहाँ भी लेखक मॉरिशस के पूर्व इतिहास को भूले नहीं है ,उस पर भी एकांकी लिखी है ।

(8) <u>निबंधकार</u>

अभिमन्यु अनत ने निबंध अत्यंत कम लिखे । निबंध–लेखन में उनकी लेखनी अत्यंत गंभीर एवं [illegible] भाषा परिनिष्ठित है । इस संदर्भ में डॉ. श्यामधर तिवारी का कहना है ,

---

1. डॉ. कमलकिशोर गोयनका - अभिमन्यु अनत : एक बातचीत – पुष्ठ –104 ।

" निबंध की भाषा , गंभीर भावों को सहज ढंग से प्रवाहपूर्ण एवं विवेचनपरक शैली में अभिव्यक्त करने में अपना सानी नहीं रखती ।"[1]

अभिमन्यु अनत ने एकांकी , निंबंध , जीवनी , संस्मरण , यात्रा–विवरण अत्यंत कम लिखें इसीलिए उनका प्रकाशन भी स्वतंत्र रूप से न होकर ' आत्म–विज्ञापन ' नामक पुस्तक में वे संकलित है । इसी कारण इन विधाओं में उनका व्यक्तित्व अन्य विधाओं की तुलना में उतनी सशक्तता से उभरकर नहीं आया है ।

(क) कृतित्व

अभिमन्यु अनत ने समाज के मध्य तथा निम्न मध्य वर्ग का सुक्ष्म निरीक्षण एवं यथार्थ जीवनानुभवों को लेकर हिंदी साहित्य जगत में पदार्पण किया । अभिमन्यु अनत में निम्न मध्य वर्ग की जीवन–रीतियाँ, विचार एवं विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं और प्रभावों को परखने की अपूर्व क्षमता है । उनकी उड़ान केवल उपन्यास तक ही सीमित नहीं है बल्कि कहानी , नाटक , एकांकी , संस्मरण , जीवनी , निबंध , काव्य आदि विधाओं में भी लेखन कार्य किया हैं । मॉरिशस के हिंदी साहित्य में सभी विधाओं में लेखन कार्य करनेवाले ' अभिमन्यु अनत ' एक मात्र साहित्यकार है । उनके विस्तृत एवं समृध्द साहित्य को देखते हुए मॉरिशस के हिंदी साहित्य के स्वातन्त्र्योत्तर काल से (1968 से) अब तक के काल को ' अनत युग ' कहा जाता है । अतः यहाँ उनके कृतित्व की जानकारी दी है ।

(1) उपन्यास : —

मॉरिसश के प्रख्यात एवं प्रथम उपन्यासकार अभिमन्यु अनत हैं । आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया, परन्तु उपन्यासकार के रूप में आप मशहूर रहे । आपके अब तक तेईस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं । उन में से ग्यारह उपन्यास मुझे प्राप्त हुए । जो उपन्यास प्राप्त हुए है उनकी विषयगत चर्चा दूसरे अध्याय में की है ।

अभिमन्यु अनत का प्रथम उपन्यास (1970) ' और नही बहती रही ' । प्रस्तुत उपन्यास में मजदुरों की दयनीय स्थिति एवं नारी–जीवन की विवशताओं की ट्रजेड़ी प्रस्तुत हुई है । 'आंदोलन' में मजदुरों की दयनीय स्थिति बेकारी, महँगाई अदि के विरूध्द , युवा वर्ग में उठ रहे विरोधों के साथ ही प्रेम–विवाह की समस्या को चित्रित किया हैं । ' एक बीघा प्यार '

---

1. डॉ. श्यामधर तिवारी – मॉरिशस में हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास– पृष्ठ 287।

में नवयुवकों को सरकारी नौकरी की इच्छा न रखते हुए खेतों की ओर बढ़ने का संदेश दिया है।' जम गया सूरज' में प्रेम–विवाह की समस्या एवं मजदुरों की समस्याओं का चित्रण किया है। ' तीसरे किनारे पर ' में एक आवारा चरित्रहीन युवक की सच्चे प्रेम की कहानी हैं । 'चौथा प्राणी' में प्रेम विवाह की समस्या, जाति–पाँति के भेद–भाव के साथ–साथ अपने घर के बोझ को सँभालनेवाली नारी के जीवन की व्यथा को स्पष्ट किया है ।

'तपती दापहरी' में भी प्रेम–विवाह की और मजदुरों की समस्याओं को राजेन नामक पात्र के माध्यम से रखा है ।'लाल पसीना' जो आप्रवासी भारतीय मजदुरों के संघर्ष की कहानी है । ' कुहासे का दायरा', ग्राम्य जीवन की विसंगतियों , राजनीतिक षड़यन्त्रो के चलते ईमानदारी और श्रम का जीवन जीने वाले मध्ययुगीन परिवार के धनेश के जीवन की कहानी है । 'शेफाली ' उपन्यास वेश्या–समाज की त्रासदी को प्रस्तुत करता हैं ।

' हड़ताल कल होगी ' दो प्रमियों की एवं मजदूर संघर्ष की त्रासदी को प्रस्तुत करता है । ' चुन–चुन चुनाव ' उपन्यास में स्वास्ति नामक नारी नेता के संघर्ष एवं आम आदमी के प्रतिशोध की कहानी है । ' अपनी ही तलाश ' ऐसी रचना है, जिसमें एक लेखक स्वंय के व्यक्तित्व की सही तलाश करना चाहता है, उपकार के बोझ से हटकर अपनी नयी पहचान बनाना चाहता है ।' अपनी–अपनी सीमा ' पति के संशस से मुक्त नारी के सामाजिक प्रतिकार की गाथा है ।

' पर पगडंड़ी नहीं मरती ' महिला मजदूर के संघर्ष एवं अंजू के त्याग एवं आदर्शमय जीवन की राम कहानी है ।' गान्धी जी बाले थे ' गांधीजी के मॉरिशस आगमन और उनके द्वारा प्रदत्त राजनीतिक , शैक्षिक जन–चेतना का ऐतिहासिक आह्वान है । 'फैसला आपका ' में राजनीतिक षड़यन्त्रों से पीड़ित नारी की पीड़ा को मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से बताकर , दोषी कौन का फैसला अभिमन्यु अनत ने पाठक पर सोपा है। ' मार्कट्वेन का स्वर्ग ' में धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले मॉरिशस देश में स्थित विविध विसंगतियों का व्यंग्यपूर्ण चित्रण कर व्दीप का असली रूप सामने रखा है ।

' मुड़िया पहाड़ बोल उठा ' रचना महिला मजदुरों के संघर्ष को सफल एवं सार्थक बनाती है, असंभव कार्य को महिला मजदूर संभव बनाती हैं । ' अचित्रित ' की कोई जानकारी प्राप्त न हो सकी । ' शब्द भंग ' में पत्रकार रोबीन द्वारा नशीले पदार्थों का सौदा करनेवाले नेताओं का पर्दाफाश किया है ।' जयगॉव का बहादुर ' बाल उपन्यास हैं । इसकी भी जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई है। ' और पसीना बहता रहा ' आप्रवासी मजदूर संघर्ष की कहानी हैं ।

(2) कहानी

अभिमन्यु अनत की कतिपय कहानियाँ भारत की पत्र–पत्रिकाएँ ' सारिका ', ' सरिता ', ' आजकल ', ' धर्मयुग ', ' कल्पना ', ' कहानी ', ' साप्ताहिक हिंदुस्तान ', ' अनुराग ' ' बाल भारती ' आदि में समय समय पर प्रकाशित हुई है ।

इन पत्रिकाओं में प्रकाशित कुछ प्रसिध्द कहानियाँ है ' पुनर्जन्म ', ' कविता जो लिखी न गयी ', ' बादलों के बीच ', ' नीम की छाया में लड़की ' आदि ।

मॉरिशस के कथा–सम्राट अभिमन्यु अनत की लगभग तीन सौ कहानियाँ अब तक प्रकाशित हो चुकी है । उनके चार कहानी–संग्रह प्रकाशित हुये है । ' खामोशी के चीत्कार ', ' इन्सान और मशीन ', ' वह बीच का आदमी ', ' एक थाली समन्दर ' । इन कहानी संग्रहों में से केवल ' वह बीच का आदमी ' कहानी संग्रह ही उपलब्ध हो सका ।

' वह बीच का आदमी ' नामक संग्रह में कुल अट्ठारह कहानियाँ हैं । उन में उल्लेखनीय है ' वह बीच का आदमी ', ' मान रक्षा ', ' बादलो के बीच ', ' नीम की छाया में लड़की ' आदि । इन कहानियों में आम आदमी के संघर्ष को तथा इतिहास की यातना से तपे हुए , समाज से टक्कर लेने वाले लोगों के संघर्ष के प्रण को वाणी दी हैं ।

(3) नाटक :—

अभिमन्यु अनत के लिखे पाँच नाटक प्रकाशित हैं । ' विरोध ', ' तीन दृश्य ', ' गूँगा इतिहास ', ' रोक दो कान्हा ', ' भरत सम भाई ' । उपर्युक्त नाटकों में केवल ' विरोध ' नामक नाटक उपलब्ध हो सका हैं ।

' विरोध ' नाटक में वर्तमान हालात के विरोध में किये नवयुवकों के विद्रोह का चित्रण हैं । इस नाटक में कुल तीन अंक और तीन दृश्य हैं । इसमें बेरोजगार युवक, गाँव के युवक, मजदूर ,सिपाही ,अखबारवाला , भिखारी ,नेता, सैलानी आदि हैं । इन्हीं पात्रों के माध्यम से स्वतन्त्रता के पश्चात मॉरिशस देश में व्याप्त राजनीतिक अवमूल्यन और सामाजिक विसंगतियों को संवाद कौशल्य से उभारा गया हैं । प्रस्तुत नाटक के संवाद व्यंग्यपूर्ण एवं मन पर आघात करने वाले है । रंगमचीयता एवं अभिनेयता की दृष्टि से यह एक सफल नाटक है ।

(4) एकांकी :—

अभिमन्यु अनत ने ' अजन्ता ' मंच की ओर से स्थानीय टेलीविजन के लिए तीस से अधिक नाटक–एकांकियाँ लिखी । उनका निर्देशन किया और इसमे भूमिकाएँ भी निभायीं । इन में से उल्लेखनीय हैं — ' सुलह ' , ' जहाँ पक्षी दम लेते है ' , ' बिल्ली को दफना दो ' , ' नवलख हार ' , ' परिवर्तन ' आदि । अभिमन्यु अनत की तीन प्रकाशित एकांकियों में ' मरिशा गवाही देना ' , ' जारी रहे तलाश ' , ' महामारी ' है । प्रारंभिक दो एकांकियाँ, 'आत्म–विज्ञापन ' नामक पुस्तक में संकलित है । तीसरी उपलब्ध नहीं हो पायी ।

' मरिशा गवाही देना ' ऐतिहासिक एकांकी है । नायक भारते क्रातीकारी गीत लिखकर मालिकों के अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध मजदुरकों झकझोरता है । मरिशा क्रांतिकारी की बेटी है । काठी के मालिकों को भारते के गीतों से नफरत है । अतः वे भारते को मार ड़ालते है । वे नहीं चाहते की अन्य मजदूर भी भारते की तरह विद्रोही बने । इस बात की गवाही मरिशा देती है ।

एकांकी में सर्वत्र संघर्ष व्याप्त है । गीत भोजपुरी में लिखे हैं। वातावरण का संकेत भी पर्याप्त है । यहाँ इतिहास का दर्द एवं यातनाएँ उभर कर वातावरण को मर्मस्पर्शी बनाने में सक्षम हुई हैं । प्रस्तुत एकांकी रंगमचीय दृष्टि से भी सशक्त है ।

दूसरी एकांकी ' जारी रहे तलाश ' है। इसमे वैज्ञानिक खोज की अन्तिम परिणति के परिणामों का विनाशक एवं विध्वंसारी स्वरूप प्रस्तुत है। मनुष्य की वैज्ञानिक तलाश बेहतरी को पाना चाहती है पर उसके बाद भी उसकी तलाश जारी रहती है और वह विनाश को स्वंय लाता है । इन बातों को यूरी और नील जैसे दो भिन्न–भिन्न देशों के वैज्ञानिकों द्वारा स्पष्ट किया हैं ।

प्रस्तुत एकांकी को अपेक्षित ध्वनि , प्रकाश , संगीत एवं हिमालय के बर्फीले वातावरण , पात्रों की वेश भूषा , हाव–भाव के माध्यम से रंग–मंच पर प्रस्तुत किया हैं । तलाश के क्षणों में आशा–निराशा, जिज्ञासा , विस्मय को भी वातावरण एवं संवाद के व्दारा प्रभावी बनाया हैं ।

तीसरी एकांकी ' महामारी ' कोशिश करने पर भी उपलब्ध न हो पायी ।

(5) कविता

अभिमन्यु अनत के तीन काव्य–संग्रह प्रकाशित हैं। पहला ' नागफनी में उलझी सौंसे ' दूसरा ' कैक्टस के दांत ' और तीसरा ' एक डायरी बयान ' । मुझे सिर्फ–व्दितीय काव्य–संग्रह ही प्राप्त हो सका । प्रथम काव्य संग्रह की चर्चा ' अभिमन्यु अनत का व्यक्तित्व ' में की है । दूसरे काव्यसंग्रह , ' कैक्टस के दांत ' में कुल 88 कविताएँ संगृहित हैं। ये

कविताएँ , मजदुरों की दुर्व्यवस्था , मॉरिशस समाज में स्थित असमानता एवं विषमता, मालिक–मजदूर के रिश्ते, भूख, भ्रष्टाचार आदि प्रश्नों को व्यक्त करती हैं । इसमें ' कॉच का टुकडा ' , ' हवा और हवा ' ' प्रतीक्षा में ' पूरी व्यवस्था को झकझोरने वाली हैं ।

कवि की भाषा में संसकृतनिष्ठ शब्द हैं । उनकी भाषा में हथौड़े की चोट–सी चिरलाक तक झंकार करने वाली क्षमता है ।

(6) निबंध :—

अभिमन्यु अनत के निबंध संख्या की दृष्टि से अत्यंत कम है लेकिन अत्यंत प्रभावी । ये निबंध अभिमन्यु अनत ने अपने ' आत्म–विज्ञापन ' पुस्तक में संकलित किये हैं । ये चार निबंध हैं , ' उपभोक्ता संस्कृति अब गाँवों में ', ' प्रेमचंद और भारतीय उपन्यासों में भारतीयता ' , ' देशी भाषाओं के विरूध्द साम्राज्यवादी षड़यन्त्र ', ' भारत कब हिंदी बोलेगा ? '

' वसंत ' पत्रिका के एक अंक में ' हिंदी की गरदन पर ये खूनी पंजे किसके है ? ' शीर्षक अभिमन्यु अनत का एक लेख प्रकाशित हुआ है । इसमें व्दीप पर भारतीय भाषाओं के साथ किये व्यभिचार का चित्रण है। हिंदी ने आझादी दिलाई वही आज छटपटा रही है । इसी को निबंध में वाणी दी है । निबंधों में भारतीय साहित्य, भाषा , संस्कृति आदि विषय पर चर्चा हैं ।

(7) जीवनी :—

अभिमन्यु अनत ने अपने साहित्य सृजन में दो महान व्यक्तियों पर जीवनी लिखी । पहली जीवनी प्रोफेसर वासुदेव विष्णुदयाल जी पर तो दूसरी मजदूर नेता राम नारायण पर । पहली जीवनी ' प्रोफेसर वासुदेव विष्णु दयाल ' में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर तो प्रकाश डाला ही है, उसके साथ उसमें उनका मॉरिशस समाज में किया संघर्षमयी कार्य कार्य भी है। उनके विभिन्न आंदोलन , मजदुरों को दिया हुवा साहस , आव्हाहन भी हैं । यह जीवनी अपने आप में मार्मिक है। दुसरी जीवनी ' मजदूर नेता – राम नारायण ' में पं. श्री हरिप्रसाद रामनारायण के बाल्यकाल से लेकर पचास वर्ष तक के समय में किये मजदूर आंदोलन, संघर्ष, मजदुरों को उनके हक न्याय के लिए प्रेरित करने आदि कार्यों का प्रामाणिक दस्तावेज हैं ।

(8) संस्मरण :—

अभिमन्यु अनत ने अपने संस्मरणों को अपनी पुस्तक ' आत्म विज्ञापन ' में संगृहित किया है। इनमें उन्होंने अपने जीवन घर–परिवेश , सामाजिक जातिय भेद–भाव , प्रधानमंत्री के संबंधों , हस्तियों की मुलाकातों , विरोधियों तथाकथित सुधारकों , साहित्यकारों , देश–विदेश की यात्राओं से जुड़े संस्मरणों को प्रस्तुत किया हैं ।

अभिमन्यु अनत ने दस संस्मरण लिखे। ' प्रधानमन्त्री का वह उत्तर ', ' आज भी शूद्र हूँ ', ' ईंट की रोटी ', ' मैं जब चरित्रहीन पढ़ रहा था ', ' हिंदी जगत का वह पहला उपहार ', ' डॉक्टर का मुर्दा ', ' जब चीफी मुझे बुलाने आयी थी ', ' भीख का वह आधुनिक तरीका ' ।

(9) यात्रा विवरण :—

अभिमन्यु अनत ने भारत और कनाडा और क्यूबा की जो यात्राएँ की हैं उसके विवरण ' आत्म–विज्ञापन ' में संग्रहित हैं । ' मेरी क्यूबक यात्रा ' और ' कुछ यादे बम्बई की ' शीर्षक यात्रावृत्त रोचक एवं पठनीय हैं ।

' मेरी क्युबेक यात्रा ' में फ्रॉकोफोनी देशों के आयोजनों , उनके सांस्कृतिक साम्राज्यवाद , भाषीय उधेड़बुन , तज्जन्य विरोध , विद्रोह के स्वर , विवशता आदि को लेखक ने बड़ी तटस्थता , ईमानदारी से व्यजना मूलक शैली में प्रस्तुत किया हैं । प्रस्तुत निबंध में अभिमन्यु अनत भाषिय उधेड़बुन के बारे में कहते है, " उस अस्त–व्यस्तता में कुछ समय के लिए कुछ भी समझ पाना कठिन हो गया था । विदेशी प्रतिनिधियों के सामने अलग–अलग प्रदर्शन होते रहे – कोई अंग्रेजी के खिलाफ था तो कोई फ्राँसीसी भाषा के , कुछ लोग क्युबेक की स्वाधीनता के लिए नारे लगा रहे थे तो रेड —इण्ड़ियनों का एक समूह अपने स्वराज्य की माँग कर रहा था ।"[1]

दूसरा यात्रा–विवरण, 'कुछ यादें बम्बई की' है। भारत को देखने–समझने की चाह अभिमन्यु अनत में सदैव रही । इसी चाह को अपने यात्रा–संस्मरण के बहुविध रूप में प्रस्तुत किया है। वे अपनी इस भारत यात्रा के बारे में कहते हैं, " भारत की जिस पहचान को पढ़ता रहता था , उसे किसी शहर में नहीं पाया । ..... हर जगह मुझे ऐसा ही लगा कि उन शहरो में भारत थक कर सो गया था और उसकी जगह पर यूरोप नाच रहा था । अगर

---

1. अभिमन्यु अनत – आत्म विज्ञापन – पृष्ठ –234 ।

गाँवों में गये बिना लौट आता, तो भारत के उन एकाध टुकड़ो को भी नहीं देख पाता, जो जीवित थे तो सिर्फ गाँवों में ।"[1]

(10) दैनिकी लेखन :—

अभिमन्यु अनत ने ' एक डायरी बयान ' नामक कविता संग्रह डायरी शैली से लिखी है । कविता के लिए इस विधा का प्रयोग करनेवाले शायद अभिमन्यु अनत पहले कवि होंगे ।

(11) आत्मकथा :—

अभिमन्यु अनत के ' आत्म–विज्ञापन ' मे नाम के अनुकूल जीवन के समग्र पक्षों का नहीं, अपितु उनकी रचनाओं, कहानी, नाटक–एकांकी, सम्पादकीय भेटवार्ता, लेख–संस्मरण, निबन्ध, कविता, उपन्यास, व्यंग्य–लेखन, यात्रा–वर्णन आदि का संग्रह प्रकाशित हुआ हैं । इन सभी विधाओं के विज्ञापन के रूप में उन्होंने जो प्रारम्भिक टिप्पणियाँ दी है वे इस संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण है । इस संदर्भ में डॉ, श्यामधर तिवारी कहते है, " उन्होंने जो प्रारंभिक टिप्पणियाँ दी हैं, उन्ही के वर्णन से उनके साहित्यिक जीवन की आत्मकथा का सा–रस अवश्य उद्‌बुध्द हुआ है ।"[2]

अभिमन्यु अनत ने ' रेखाचित्र ' स्वतंत्र रूप से तो नहीं लिखे । लेकिन उनके संस्मरणों में यह विधा झलकती है ।

(12) अनुवाद :—

' मॉरिशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास ' यह अनुदित रचना है । इसके बारे में कोई अन्य जानकारी हाथ में नहीं आ पायी ।

---

1. अभिमन्यु अनत – आत्म विज्ञापन – पृष्ठ –245 ।

2 डॉ, श्यामधर तिवारी –हिंदी साहित्य का उद्‌भव और विकास – पृष्ठ–317 ।

(13) संपादन :—

अभिमन्यु अनत की संपादित रचनाएँ ' मॉरिशस की हिंदी कहानी ', और ' मॉरिशस की हिंदी कविता ' हैं। इसमें मॉरिशस की कहानी और कविता का इतिहास शब्दबद्ध है ।

(14) संकलन :-

अभिमन्यु अनत की ' आत्म–विज्ञापन ' रचना के अंतर्गत उन्होंने अपनी चुनी हुई रचनाओं का संकलन किया हैं । इसकी विस्तृत चर्चा ऊपर की है । दूसरी रचना ' अभिमन्यु अनत : प्रतिनिधि कहानियाँ ' हैं। इसके संपादक है डॉ. कमल किशोर गोयनका हैं ।

निष्कर्ष

अभिमन्यु अनत मॉरिशस के ऐसे हिंदी रचनाकार है जिन्होंने अपने साहित्य के जरिए भारतीय संस्कृति और संस्कार के प्रति अपनी गहरी रूचि दिखाई है । उनका समग्र साहित्य अपने जीवन के भोगे यथार्थ को प्रतिबिंबित करता है । किसी समय अभिमन्यु अनत के पूर्वज भारत वर्ष से बँधवाँ मजदूर के रूप में मॉरिशस आए थे । मॉरिशस आने के बाद अपनी मातृभूमि के संस्कारों और संस्कृति से वे बूरी तरह से अलग हुये । अभिमन्यु अनत को पुरखों की विरासत के रूप में अपने देश और वतन से बिछुडने की पैतृ सम्पत्ति हुई थी। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से उन वेदनाओं को स्वर दिया । यही कारण है कि उनका समग्र साहित्य आनिवासी भारतियों के व्यथा , वेदना का महाकाव्य बनकर उभर आता हैं।

अभिमन्यु अनत बहुमुखी प्रतिभा के हिंदी साहित्यकार सिद्ध होते है । उन्होंने कहानी , नाटक , एकांकी , काव्य , संस्मरण , जैसी वैविध्यपूर्ण विधाओं में लेखन किया । उनके साहित्य में व्यक्तित्व और कृतित्व का अनोखा मेल है । वे मॉरिशस के बहुप्रसव् हिन्दी लेखक रहे है । गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों कसोटियों पर वे श्रेष्ठ सिद्ध होते है । कला की दृष्टि से देखा जाए तो उनके साहित्य में विषय वैविध्य , शिल्पगत प्रयोग , भाषा की सहजता जैसे गुण अपने आप नजर आते हैं ।

मॉरिशस के हिंदी साहित्य के विकास में अभिमन्यु अनत का योगदान असाधारण रहा है । उनका साहित्य न सिर्फ मॉरिशस के जन–जीवन को चित्रित करता है , अपितु वहाँ की प्राकृतिक सुषमा को भी चित्र रूप देता है। खुशी , गम , गौरव सारे भावों को वे अपने साहित्य में कलात्मक दृष्टि से पिरोकर पेश करते हैं । समाज के शोषित वर्ग की पीड़ा उनके साहित्य का प्रमुख स्वर है । उनके साहित्य के समग्र मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि वर्ण , वर्ग तथा शोषणमुक्त , स्वतन्त्र समाज उनके साहित्य का सपना हैं ।